रिपोर्ट

हिन्दी विभाग, श्यामलाल कॉलेज एवं सामाजिक विज्ञान अनुसन्धान परिषद (उत्तरी क्षेत्रीय केंद्र) के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित

दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी (हाइब्रिड मोड)

(07-08 फरवरी, 2025)

भारतीय दर्शन और भक्तिकाव्य

हिंदी विभाग, श्यामलाल कॉलेज द्वारा 7-8 फरवरी, 2025 को आईक्यूएसी एवं भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसन्धान परिषद (उत्तरी क्षेत्रीय केंद्र) के संयुक्त तत्त्वावधान में 'भारतीय दर्शन और भक्तिकाव्य' विषय पर दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का सफल आयोजन किया गया। दो दिन चले इस अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में देश-विदेश के विभिन्न संस्थानों के विद्वानों, प्राध्यापकों, शोधार्थियों और विद्यार्थियों ने बतौर रिसोर्स पर्सन एवं प्रतिभागी भाग लिया। यह संगोष्ठी में उद्घाटन और समापन सत्रों के अलावा छह मुख्य सत्रों और चार समानांतर सत्रों में विभाजित थी।

7 फरवरी को उद्घाटन सत्र में प्रो. सच्चिदानंद मिश्र सदस्य सचिव, आईसीपीआर, नई दिल्ली, प्रो. रबि नारायण कर, प्राचार्य, श्यामलाल कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, तथा प्रो. गिरीश्वर मिश्र, पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा की गरिमामयी उपस्थिति रही। इस सत्र की अध्यक्षता प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने की। सर्वप्रथम अतिथियों ने दीप प्रज्ज्वलित करके संगोष्ठी का उद्घाटन किया। इसके उपरांत कॉलेज की सांस्कृतिक समिति के विद्यार्थियों ने सरस्वती वंदना पर नृत्य प्रस्तुत किया।

अपने विशिष्ट वक्तव्य में प्रो सच्चिदानंद मिश्र ने भक्ति की विविधता, अनेकरूपता, अनेकभाषीयता को रेखांकित किया और यह जोर देकर कहा कि भक्ति की कोई भी विवेचना करते हुए उसे एक रेखीय तरीके से समझने की जगह इसकी बहुलवादी प्रकृति का ध्यान रखना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि भक्ति की विभिन्न अवधारणाओं के परिप्रेक्ष्य में भक्तिकाव्य के भी परिप्रेक्ष्य बदलते जाते हैं। इसलिए भक्तिकाल पर विचार करते हुए किसी एकरेखीय विवेचन से बचना चाहिए। भक्ति के साथ ही कविता भी समाज के लिए उपयोगी होनी चाहिए और भारतीय साहित्य चिंतन इसकी तस्दीक करता है। उन्होंने कहा कि भारत और भारतीय दर्शन को देखने की दृष्टि पश्चिमी रही है। जरूरत इस

बात की है कि भारत को भारतीय परंपरा की दृष्टि से देखा और समझा जाए। भारत में पश्चिम की तरह ईश्वर का एकरूपीकृत रूप नहीं है। यहां ईश्वर के कई रूप हैं। बौद्ध परंपरा निरीश्वरवादी परंपरा है। 11वीं सदी पूर्व इसकी समृद्ध परंपरा रही है। शंकर के दर्शन में निर्गुण और सगुण दोनों के रूप मिलते हैं। वे मूर्ति को भी मिथ्या बताते हैं। प्रो. सच्चिदानंद का वक्तव्य बेहद उपयोगी और सारगर्भित रहा और उन्होंने संगोष्ठी के विषय को काफी विद्वतापूर्ण तरीके से प्रस्तावित करने का कार्य किया।

अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में प्रो.गिरीश्वर मिश्र, पूर्व विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग और पूर्व कुलपति महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, ने भक्ति और दर्शन की समकालीन, सामाजिक उपादेयता और प्रासंगिकता पर बल दिया और कहा कि आज समस्या यह है कि भक्तिकाव्य का नये सिरे से पाठ कैसे किया जाए। अहं का विसर्जन, अपनी सीमित अस्मिता से पार जाना, आत्मबोध, आत्म अन्वेषण, आत्मसंधान ही भक्ति का उद्देश्य है। प्रो. मिश्र ने अपने वक्तव्य के द्वारा भक्ति और कविता के विभिन्न पक्षों पर प्रकाश डाला। उनका व्याख्यान बेहद ज्ञानवर्धक और अंतर्दृष्टिपूर्ण रहा।

चाय अवकाश के उपरांत प्रथम सत्र में, जिसका विषय 'भारतीय दर्शन : प्रकृति, प्रभाव और प्रसार' था में प्रो. कृष्ण मणि पाठक, प्रोफेसर, दर्शन शास्त्र विभाग, हिन्दू कॉलेज दिल्ली, विश्वविद्यालय, प्रो. अजय वर्मा, प्रोफेसर, दर्शन शास्त्र केंद्र , जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय का वक्तव्य हुआ।

प्रो. कृष्ण मणि पाठक ने भारतीय दर्शन के पठन-पाठन के स्वरूप पर बात करते हुए उसके इतिहास को बताया और कहा कि कालखंड विशेष में दर्शन का विकास हुआ है और वह समय और समाज के दबाब और बदलाव के बीच विकसित हुआ। अगले वक्तव्य में दर्शनशास्त्र के प्रोफेसर अजय वर्मा ने कहा कि भक्ति मन का उल्लास है। चित्तवृत्तियों का निवारण भक्ति है। भक्ति स्वयं में तत्त्व है। भक्त सिद्धावस्था को प्राप्त अमृतस्वरूप हो जाता है। अर्थात वह सांसारिकता से मुक्त हो जाता है। भक्ति निरोगरूपा और शांति स्वरूपा है।

दूसरे सत्र के पहले वक्तव्य में संस्कृत के विद्वान असिस्टेंट प्रोफेसर, महात्मा गाँधी केन्द्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय मोतिहारी, बबलू पाल ने भक्ति के नारदीय स्वरूप की चर्चा करते हुए भक्त और भगवान के बीच संबंधों की चर्चा की और यह भी कहा कि भक्ति फल रचता है। यह मनुष्य की भावनाओं को निर्मल करता है। दूसरे वक्तव्य में स्वतंत्र वैदिक चिंतक प्रो. उमेश ने वेद की ऋचाओं को ईश्वर भक्ति मानते हुए भागवत पुराण में मौजूद भक्ति के स्वरूप की चर्चा की। उन्होंने आत्मज्ञान को भक्ति बताया। सत्र की अध्यक्षता करते हुए पीजीडीएवी महाविद्यालय, के प्रो. अवनिजेश अवस्थी ने भक्ति आंदोलन की विशेषताओं को विस्तार से बताया।

सेमिनार के दूसरे दिन पहले सत्र में फ्लोरिडा अमेरिका से जुड़े श्रीमद भागवत के विद्वान वक्ता प्रो. सत्यनारायण ने भक्त और भगवान के बीच भक्ति संबंधों की चर्चा करते हुए संबंध तत्व, अभिधेय तत्व और प्रयोजन तत्व की विस्तार विवेचना की। उन्होंने भागवत का प्रभाव तुलसी की रचनाओं में दिखाते हुए विस्तार से चर्चा की।

ऑनलाइन माध्यम से जुड़ीं दिल्ली विश्वविद्यालय की प्रो. सुधा सिंह ने पश्चिमी इतिहासकारों की तर्ज पर लिखे गये भारतीय इतिहास, दर्शन और भक्तिकाव्य का विखंडन करते हुए हिंदी के भक्ति काव्य को विशिष्ट माना।

उन्होंने मध्यकालीन चिंतन के संदर्भ में कहा कि धार्मिक शब्दावली का संदर्भ धार्मिक न होकर राजनीतिक है। हिंदी का भक्ति साहित्य राजनीतिक-सामाजिक-धार्मिक परिस्थितियों की ऊपज है। उन्होंने कहा कि सामाजिक ढाँचे और विभाजन को समझे बगैर भक्ति के अनुभव को नहीं समझा जा सकता है। भक्त कवियों ने जाति और वर्ण की कठोरता को लचीला बनाया। जेंडर के सवाल को एड्रेस किया। यह जीवन के स्वीकार्य का काव्य है। इसके पूर्व का साहित्य विग्रह, निग्रह का साहित्य है। यह सर्वोच्य मानव-मूल्यों को स्थापित करता है। यह गार्हस्थ जीवन का काव्य है और सामंत विरोधी भी।

सत्र की अध्यक्षता कर रहे हिन्दी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रोफेसर और अधिष्ठाता प्रो. अनिल राय ने भक्ति को अखिल भारतीय मानते हुए इसे त्याग, संघर्ष और मानवता का काव्य माना। उन्होंने कहा कि तुलसी समेत सभी भक्त कवि एक वैकल्पिक समाज की अवधारणा प्रस्तुत करते हैं। उनके काव्य में रचा आदर्श हमारे समाज के लिए प्रेरणास्पद हैं।

द्वितीय दिवस के दूसरे सत्र में हिन्दी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रो. चंदन चौबे ने पूर्वोत्तर भारत में फैले भक्ति के स्वरूप की चर्चा करते हुए शंकरदेव के दर्शन को विस्तार से बताया और कहा कि वह प्रदर्शनकारी कलाओं के माध्यम से जन-जन तक पहुंचा। उन्होंने कहा कि संतों की वाणियों में भारतबोध है।

करमा देवी पीजी कॉलेज, बस्ती के प्राचार्य डॉ. मुकेश मिश्र ने दक्षिण भारत में भक्ति के उभार की चर्चा की और दक्षिण भारत की भक्ति की धारा के उत्तर भारत की भक्ति की धारा पर पड़े प्रभाव और उसकी विशिष्टता को रेखांकित किया और तिरुवल्लुवर के भक्ति साहित्य पर प्रकाश डाला। सत्र की अध्यक्षता कर रहे ओड़ीशा राज्य मुक्त विश्वविद्यालय प्रो. जयंत कर शर्मा ने ओड़िया साहित्य में मौजूद भक्ति के स्वरूप की चर्चा की। उन्होंने कहा कि पंचसखा में निर्गुण-सगुण का भेद नहीं है। इसमें भक्ति का समावेशी रूप मिलता है। तीसरे सत्र में डीसीएसके कॉलेज, मऊ के प्राचार्य प्रो. शर्वेश पांडेय ने भक्ति के आधुनिक स्वरूप पर बात करते हुए जन-जन में इसकी स्वाभाविक उपस्थिति को बताया और कहा कि भक्ति लोक-व्यवहार में शामिल है।

तीसरे सत्र में बोलते हुए हिन्दी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय के पूर्व विभागाध्यक्ष और भक्तिकाव्य के विद्वान प्रो. गोपेश्वर सिंह गांधी की राजनीति और समाजनीति में भक्त कवियों के प्रभाव को स्वीकार करते हुए कहा कि गांधी के राम और कबीर के राम में समानता है। गांधी के राम सिर्फ तुलसी के राम नहीं है। गांधी का जीवन और आचरण ही संदेश है। कबीर का जीवन और आचरण भी महान संदेश देता है। उन्होंने आधुनिक समाज सुधारक दयानंद सरस्वती और कबीर में समानता का उल्लेख करते हुए कहा कि दयानंद पुरोहितवाद और कर्मकांड का विरोध करते हैं और कबीर भी।

सत्र की अध्यक्षता कर रहीं इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की पूर्व प्रोफेसर प्रो. रीतारानी पालीवाल ने भक्ति काव्य की व्यापकता को आधुनिक कवियों के हवाले से दर्शाया। उन्होंने भारतेन्दु, मैथिलीशरण गुप्त, हरिऔध से लेकर निराला के काव्य में मौजूद राम और कृष्ण की उपस्थिति का उल्लेख किया। उन्होंने भक्ति कवियों में मौजूद संगीततत्व की भी चर्चा की।

समापन सत्र में विशिष्ट अतिथि स्टेट नोडल ऑफिसर (मीडिया), इलेक्शन डिपार्टमेंट, राजस्थान सेक्रेट्रियेट, जयपुर, प्रो. सुधीर सोनी ने राजस्थान के भक्त कवियों के माध्यम से भक्ति के प्रवाह को दर्शाया साथ ही उन्होंने बताया कि सांभर में नमक उत्पादन और उसे विदेश निर्यात करने के क्रम में यहां के साहित्य और दर्शन को दुनिया तक पहुंचाया गया। तुलसीदास की लोकप्रियता का एक बड़ा कारण यह भी है। बड़े पैमाने पर हस्तलिखित प्रतियां दुनिया के कोने-कोने तक पहुंची।

सेमिनार में बड़ी संख्या मे विद्यार्थियों और देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों से आए शोधार्थियों और प्राध्यापकों की भागीदारी रही। इस अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में 120 के करीब विद्यार्थियों, शोधार्थियों और प्राध्यापकों ने निबंधन कराया।

इस अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में श्यामलाल कॉलेज के अलावा इन संस्थानों के प्रतिभागियों की भागीदारी रही :

इलाहाबाद विश्वविद्यालय, राजर्षी शाहू कला एवं विज्ञान महाविद्यालय वालूज, औरंगाबाद, महाराष्ट्र, हिंदी विभाग, कला संकाय, दिल्ली विश्वविद्यालय, राजकीय स्नातकोत्तर नेहरू महाविद्यालय झज्जर , हरियाणा, गांधी मेमोरियल नेशनल कॉलेज, अंबाला कैंट, हरियाणा, इलाहाबाद केंद्रीय विश्वविद्यालय, कमला नेहरू कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, अटल बिहारी वाजपेई विश्वविद्यालय बिलासपुर छत्तीसगढ़, दाऊ उत्तम साव शासकीय महाविद्यालय मचांदुर, दुर्ग, छत्तीसगढ़,गवर्नमेंट नवीन कॉलेज, सोनाखान, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालयए पंजाब केंद्रीय विश्वविद्यालय, बठिंडा, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा, श्री गुरु तेग बहादुर खालसा कॉलेज दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली,शहीद भगत सिंह कॉलेज, राजा श्रीकृष्ण दत्त पी जी कॉलेज जौनपुर यूपी, एएनएस कॉलेज, जहानाबाद, बिहार, केशव महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, वीर कुंवरसिंह विश्वविद्यालय, बिहार, दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गोरखपुर, जीसस एंड मेरी कॉलेज, चाणक्यपुरी, दिल्ली विश्वविद्यालय, श्री गुरु तेग बहादुर खालसा कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, एमसीएम डीएवी महिला कॉलेज, सेक्टर 36-ए, चंडीगढ़, दाऊ उत्तम साव शासकीय महाविद्यालय मचांदुर,दुर्ग(छ.ग.), मुम्बई विश्वविद्यालय,द. ग. तटकरे महाविद्यालय मानगांव रामगढ़ महाराष्ट्र, कन्या महाविद्यालय, खरखौदा (सोनीपत), लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, श्यामा प्रसाद मुखर्जी महिला महाविद्यालय, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर, शम्भू दयाल कॉलेज ग़ाज़ियाबाद, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, जवाहरलाल नेहरू यूनिवर्सिटी, दिल्ली विश्वविद्यालय, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक, हरियाणा, एनआईआईएलएम यूनिवर्सिटी कैथल, हरियाणा, हरियाणा केन्द्रीय विश्वविद्यालय, महेंद्रगढ़, शास. इंदिरा गाँधी गृह विज्ञान कन्या, महाविद्यालय, शाहडोल (म. प्र.), होलीक्रॉस वुमेंस कॉलेज, अंबिकापुर, सरगुजा, छत्तीसगढ़, शारदा विश्वविद्यालय, महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी, बिहार।

चार समानांतर सत्रों में 70 से अधिक प्रतिभागियों ने ऑफलाइन तथा ऑनलाइन रूप से अपना शोध आलेख प्रस्तुत किया।

कुल मिलाकर यह संगोष्ठी काफी सफल और सार्थक रही।

Figure 1 उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि प्रो गिरीश्वर मिश्र का स्वागत करते प्राचार्य प्रो रबि नारायण कर।

Figure 2 उद्घाटन सत्र : बाएं से : डॉ मुकेश कुमार मिश्र, प्रो सच्चिदानंद मिश्रा, प्रो गिरीश्वर मिश्र, प्राचार्य प्रो रबि नारायण कर, प्रो जयंत कर शर्मा

Figure 3प्रथम सत्र के समापन के पश्चात ग्रुप फ़ोटो

Figure 4उद्घाटन सत्र मे विभाग प्रभारी सत्य प्रिय पाण्डेय की पुस्तक का विमोचन करते अतिथि।

Figure 5 अतिथियों का स्वागयाता परिचय कराते प्रभारी सत्य प्रिय पाण्डेय

संगोष्ठी की कुछ और झलकियां

SLC (University of Delhi)
Shyam Lal College
श्यामलाल कॉलेज
NRC - DELHI
SHYAM LAL COLLEGE
University of Delhi

SLC (University of Delhi)
Shyam Lal College